सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य या कार्य (Object or Roles of Social Survey)

मोटे तौर पर ज्ञान प्राप्ति, समस्या का समाधान तथा समाज कल्याण की परियोजना को प्रस्तुत करना सामाजिक सर्वेक्षण के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं। श्री मोजर (Moser) के शब्दों में, "सर्वेक्षण जन-जीवन के किसी पक्ष पर प्रशासन सम्बन्धी तथ्यों को जानने की आवश्यकता की पूर्ति के लिए, अथवा किसी कार्य-कारण सम्बन्ध की खोज करने के लिए अथवा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त के किसी पक्ष पर नया प्रकाश डालने के लिए किया जा सकता है।"

(1) सामाजिक तथ्यों का संकलन (Collection of Social Facts)-

सामाजिक घटना या समस्या के विषय में निर्भरयोग्य तथ्यों को एकत्रित करना है। सामूहिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं तथा व्यवहारों के सम्बन्ध में गणनात्मक आँकड़ों का संकलन सामाजिक सर्वेक्षण का प्रमुख उद्देश्य है।

(2) सामाजिक समस्याओं का अध्ययन (Study of Social Problem)-

सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य उन समस्याओं का अध्ययन है जो कि साधारणतया मानव-जीवन को पीड़ित करती है। गरीबी, बेरोजगारी, गन्दगी, बीमारी, अभाव, अशिक्षा, अपराध एवं बाल-अपराध, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति, आत्महत्या, विवाह-विच्छेद, सामाजिक संघर्ष व तनाव आदि ऐसी ही सामाजिक समस्याएँ हैं, जो मानव के दुःख-दर्द को मुखरित करती हैं।

(3) श्रमिक वर्ग की दशाओं का अध्ययन (Study of the Condition of Working Class.)—

सामाजिक जीवन से सम्बन्धित अधिकांश समस्याओं श्रमिक वर्ग में अत्यन्त स्पष्ट रूप में होता है। इसीलिए सामाजिक सर्वेक्षण का विशेष ध्यान श्रमिक वर्ग की दशाओं तथा समस्याओं पर होता है। इसके दो प्रमुख कारण हैं— प्रथम श्रमिक वर्ग की दशाओं के अध्ययन से समुदाय का अध्ययन उसमें आ जाता है। दूसरा कारण यह है कि इसके जीवन की दशाओं से अन्य सभी प्रकार की समस्याएं घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ, श्रमिक वर्ग में व्याप्त बेकारी को ही लें तो हम कह सकते हैं कि जहाँ बेकारी है वहाँ गरीबी होगी, स्वास्थ्य का स्तर भी निम्न होगा, शिक्षा का प्रसार कम होगा एवं अपराध व बाल-अपराध की सम्भावनाएँ अधिक होंगी। अतः सामाजिक सर्वेक्षण श्रमिक वर्ग की समस्याओं के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का अध्ययन कर लेने का प्रयास किया जाता है।

(4) कार्य-कारण सम्बन्ध की खोज (Search for Causal Relation Ship)—

सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करते हुए उन घटनाओं में अन्तर्निहित कारणों को ढूँढने का प्रयत्न करता है क्योंकि इसकी प्रथम मान्यता यही है कि प्रत्येक सामाजिक घटना का कोई न कोई कारण अवश्य ही होगा। सामाजिक घटना आकस्मिक नहीं होती है। उसमें नियमितता होती है और इसीलिए उसमें अन्तर्निहित कारणों को ढूँढा जा सकता है। इसी कार्य-कारण

सम्बन्धों की खोज करना सामाजिक सर्वेक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

(5) सामाजिक सिद्धान्तों की पुनर्परीक्षा (Verification of Social Thoughts)—

सामाजिक सर्वेक्षण का एक उद्देश्य विद्यमान सामाजिक सिद्धान्तों की पुनर्परीक्षा करना है। सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन होने से सामाजिक घटना की प्रकृति बदल जाती है और उसके बदलने से सामाजिक सिद्धान्त में भी आवश्यक परिवर्तन व परिवर्तन की जरूरत होती है। सामाजिक सर्वेक्षण विद्यमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में वास्तविक तथ्यों का संकलन कर इस बात की परीक्षा करता है कि घटना के सम्बन्ध में जो पुराने सिद्धान्त हैं वे अब ठीक हैं या नहीं और यदि नहीं हैं तो परिवर्तित परिस्थिति में खरा उतरने के लिए किस प्रकार का सिद्धान्त उचित होगा।

(6) प्राक्कल्पना का निर्माण तथा परीक्षण (Formulation and Testing of Hypothesis)—

पूर्व-सर्वेक्षण (Pilot Survey) प्राक्कल्पना के निर्माण में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है। जिस समूह का अध्ययन करना है उसके विषय में एक सामान्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए पूर्व सर्वेक्षण किया जाता है।

(7) सामाजिक समस्याओं का समाधान व समाज-सुधार (Solution of Social Problems and Social Reforms)—

सामाजिक सर्वेक्षण एक समस्या से सम्बन्धित तथ्यों के आधार पर उसके कारणों को इस उद्देश्य से भी ढूंढने का प्रयत्न करता है कि उस समस्या का समाधान किया जा सके। इस अर्थ में सामाजिक

समस्याओं के समाधान की खोज भी सामाजिक सर्वेक्षण का एक उद्देश्य है। सामाजिक सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर समाज-कल्याण की एक रचनात्मक परियोजना को प्रस्तुत करना भी सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य होता है। पर स्मरण रहे कि सामाजिक सर्वेक्षण कोई सामाजिक योजना बनाने वाला (Social Planner) नहीं होता है, वह तो केवल अपने सर्वेक्षण से प्राप्त ज्ञान के आधार पर रचनात्मक योजना बनाने के लिए आवश्यक सिद्धान्तों को प्रतिपादित करता है; उनको वास्तविक रूप में क्रियान्वित करने का काम प्रशासकों, राष्ट्र-नेताओं तथा समाज-सुधारकों का होता है। सामाजिक सर्वेक्षण समस्याओं के समाधान व समाज-कल्याण से सम्बन्धित जिन सिद्धान्तों व सुझावों को प्रस्तुत करता है वे सभी सामाजिक शोधकर्ता के लिए सहायक सिद्ध होते हैं क्योंकि ये सिद्धान्त सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में उनकी जानकारी को अधिक स्पष्ट करते हैं।